डॉ. सुरेश गायकवाड
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
सातारा - 415 002

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि **कु. सुवर्णा नरसु कांबळे** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध, **''आँचलिक उपन्यास के रूप में 'इदन्नमम' का अनुशीलन''** मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक बड़े परिश्रम के साथ पुरा किया है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। कु. सुवर्णा नरसु कांबळे के इस अनुसंधान कार्य के प्रति मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

S Gaikwad

स्थान : सातारा
तिथि : 31 दिसंबर 2012

(डॉ. सुरेश गायकवाड)
शोध-निर्देशक

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि, **कु. सुवर्णा नरसु कांबळे** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि का लघु-शोध प्रबंध **''आँचलिक उपन्यास के रुप में 'इदन्नमम' का अनुशीलन''** परिक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

डॉ. बी. डी. सगरे
असो. प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा
सातारा.

प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

LAL BAHADUR SHASTRI COLLEGE SATARA

स्थान : सातारा

तिथि : 31 / 12 / 2012

प्रख्यापन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध, **"आँचलिक उपन्यास के रूप में 'इदन्नमम' का अनुशीलन"** मेरी मौलिक कृति है जो एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह कृति इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर तथा अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

स्थान : सातारा
तिथि : 31 दिसंबर 2012

(कु. सुवर्णा नरसु कांबळे)
शोध-छात्रा

'प्राक्कथन'

मनुष्य जाती के विकास का लेखा-जोखा नापा जाए तो वहाँ 'साहित्य' साधन के रुप में साह्य करता है। साहित्य की अलग अलग विधाओं मे 'उपन्यास विधा' के माध्यम से मनुष्य जीवन का समग्र विवेचन किया जाता है। इसलिए 'उपन्यास विधा' को मानव जाती का 'महाकाव्य' कहा जाता है। मानव जीवन से संबंधित घटनाओं और संवेदनाओं की व्यापक और परिपूर्ण व्यंजना 'उपन्यास विधा' के माध्यम से होती है। इसलिए प्रेमचंदजी ने 'उपन्यास' को 'मनुष्यजीवन का चित्रमात्र' कहा है । एक सजग प्रहरी की तरह उपन्यासकार बड़ी सजगता से मानवजीवन का अंकन उपन्यास में करता है। आज के वैज्ञानिक, संगणकीय युग में आंतरिक्ष में जा पहुँचे मानव को देखकर हम गर्वित होते है। परंतु, वही दूसरी ओर दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करनेवाले मनुष्य का चित्रण भी उपन्यास के माध्यम से हो रहा है। मानव जीवन की आधारभूमी पर खड़ा उपन्यास साहित्य में जीवनावश्यक पूर्तियों, अधिकारों से वंचित, अपने ही भाई का जीवन देखकर व्यथित हुआ उपन्यासकार आज दलित, पीड़ीत, श्रमिक, सर्वहारा वर्ग का चित्रण करना अपना धर्म मानता है। आजादी के बाद ग्रामीण जीवन में आये सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक बदलते समाज जीवन का प्रभावी चित्रण आज के उपन्यासों में होने लगा है। आज हिंदी उपन्यास साहित्य में ग्रामीण जन-जीवन, साधारण जीवन, श्रमिक, किसान और आम आदमी के चित्रण के साथ-साथ आँचलिक जीवन और भारतीय स्त्री जीवन, दलितजीवन, औद्योगिकरण से निर्माण उत्तराधुनिकता इन प्रवाहों को लेकर लेखन हो रहा है। इन धाराओं में आँचलिक उपन्यास साहित्य ने विशेष स्थान प्राप्त किया है। फणीश्वर नाथ रेणूजी के 'मैलाआँचल' के माध्यम से सभ्यता एवं नगरों के वातावरण से सुदूर भारत देश के अलग-अलग प्रदेशो के अछुत, अविकसित भूभागों का चित्रण आँचलिक उपन्यासों मे होने लगा जिसमें विशिष्ट गाँव, क्षेत्र, विशिष्ट भूभाग को केंद्र में रखकर वहाँ के आँचलिक विशेषता के साथ जन-जीवन का चित्रण होने लगा जैसे- ग्रामांचल, पहाड़ीअँचल, नदी-समुद्रतटअँचल, महानगरीय अँचल, विशिष्ट स्थानांचल, विशिष्ट जनजातीय अँचल आदि भेदों के साथ आँचलिक उपन्यास लिखे जाने लगे। परंतु 'आँचलिक उपन्यास' का उद्देश एक ही रहा, वह

BARD BABASAHEB AMBEDKAR LIBRARY

विकास से कोसो दूर रहे दूर-दूर के गाँव क्षेत्र के मानव जीवन का चित्रण करते हुये उनके जीवन-संघर्ष को चित्रबध्द करना और नागरी सभ्य समाज को उनकी स्थिती-गति के बारे में सोचने के लिये बाध्य करना। आज मानवीय जीवनानुभूति ने और संवेदनाओं से भरे इस 'आँचलिक उपन्यास धारा' का हिंदी साहित्य में बहुआयामी और महत्वपूर्ण स्थान है। आज आँचलिक उपन्यास 'विशेष की जिन्दगी' अपनी 'सामूहिक विशिष्टता' के साथ राष्ट्रीय सन्दर्भो को लेकर प्रस्तुत हो रही है। पीछडे, सर्वहारा, श्रमिक, दलित, नारी, निम्नवर्ग, भूमीहीन के प्रति गहन सहानुभूति और प्रगतीशील दृष्टि रखनेवाले 'आँचलिक उपन्यास' अपने समय के मनुष्यजीवन की साक्ष बन रहे है। विकासोन्मुख राष्ट्र में अपनी प्रगती की सच्ची पहचान करा देने में 'आँचलिक उपन्यास' महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है; जिसने मत्सत्ता बनने जा रहे भारतीय समाज को फिर एक बार पिछे मूडकर देखने के लिए बाध्य किया है।

विषय का महत्व :-

मनुष्य जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज 'उपन्यास सहित्य' समय के साथ बदलते मानवसमाज को रेखांकित करता है। आज आधुनिक युग में भी विश्वभर की मानवजाती दो वर्गों में बट गई है- अमीर और गरीब, शोषक और शोषित वर्ग में विभाजीत मानवजाती को मानवाधिकार प्राप्त करा देने के लिए आजादी के बाद भारत के गणतंत्र ने समाजवादी गणतंत्र प्रणाली का स्विकार किया परंतु, परंपरा से जाती भेद, वर्ण भेद, वर्ग भेद में बटा यह भारतीय समाज उसी परंपरा को ढो रहा है। आम आदमी के विकास के लिए सरकार ने अनेक पंचवार्षिक योजनाओं का निर्माण किया परंतु विकास की वह धारा उनके यहाँ तक पहुँची ही नही। जमींदार, सामंत से सेठ, साहूकार, पूँजीपति बने मिल मालिकों ने भूमीहीन किसान, मजदूर, श्रमिक, सर्वहारा वर्ग शोषण की परंपरा कायम रखी है। प्रेमचंदजी के 'गोदान' के माध्यम से किसानवर्ग की स्थिती को वाणी मिलकर 'होरी' यह पात्र व्यक्ति विशिष्ट न रहकर समष्टीगत बनकर पूरे भारतवर्ष के किसान के सुख-दु:खो का प्रतिनिधी बना था। आज 'आँचलिक उपन्यास' के माध्यम से 'आँचलिक उपन्यासकार' सर्वहारा, मजदूर, श्रमिकवर्ग के यातनाओं को वाणी दे रहा है। उसमें उपन्यासकार नागार्जुन,

फणीश्वरनाथ रेणू, भीष्म सहानी, निर्मल वर्मा, रांगेय राघव, राही मासूम रजा, श्रीलाल शुक्ल, जगदीशचन्द्र, रामदरश मिश्र, रामदेव शुक्ल, वीरेन्द्र जैन प्रमुख रचनाकार रहे है जिन्होने सर्वहारा वर्ग, किसान, भूमीहीन, मजदूरों के जीवन का चित्रण अँचल विशेषता के परिवेश को लेकर प्रस्तुत किया है। विशिष्ट प्रदेश के लोगोंके सामजिक, राजकीय, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन का चित्रण आँचलिक उपन्यासों में होता रहा जिसमें मनुष्यजीवन के संघर्षरत कहानी पर मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव लक्षीत होता है। आँचल के आड छिपे बालक के गुण-अवगुणों से हम अज्ञात रहते है, उसी प्रकार भारतीय समाज के आँचल में भी अनेक अच्छाईयाँ, बुराईयों का लेकर मानव समूह का चित्रण आँचलिक उपन्यासों में होता रहा। एम. ए. की शिक्षा प्रदान करते समय 'प्रेमचंदजी' का 'गोदान', 'रेणू' का 'मैला आँचल' 'राही' का 'आधागाँव', 'श्रीलाल शुक्ल' का 'रागदरबारी', 'मन्नू भंडारी' का 'महाभोज' आदि उपन्यासों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वतंत्रतापूर्व और स्वतंत्रता के बाद भी भारतीय किसान वर्ग और मजदूरों पर होनेवाले अत्याचारों की परंपरा इस उपन्यासों में भी चित्रित हुई। समय के बदलने के बाद भी सामंतो से पूँजीपति बने वर्ग की मानसिकता आज भी वही है। मजदूरों, स्त्रियों की वेदना, पीड़ा, कचोट, छटपटाहट, हिनता बोध का इन उपन्यासों से एहसास हुआ और प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य करने के लिए मैं प्रेरित हुई।

स्त्रियों, मजदूरों, शोषितों, सर्वहारा वर्ग के जीवन पर शोधकार्य करने की बात जब मैंने श्रद्धेय डॉ. सुरेश गायकवाडजी से की तो उन्होंन विचार-विमर्श के बाद इस विषय से अवगत कराते हुए मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'इदन्नमम' पर शोध कार्य करने के लिये प्रेरणा दी और दीन-दलितों, श्रमिक, मजदूर, स्त्री वर्ग की यातनाओं आदि को पढकर भाव कातर हो गई। मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' इस उपन्यास पर लघु शोध कार्य करने के लिये प्रस्तुत हुई।

शोध विषय का महत्व एवं उद्देश्य :-

मैत्रेयी पुष्पा आधुनिक साहित्यकारों में एक प्रतिष्ठित अध्ययता, सुविख्यात प्रगतीशील, सृजनशील और संवेदनशील साहित्यकार है। भारतीय समाज मन की विश्लेषक रही मैत्रेयी पुष्पा ने अपने लेखनी से भारतीय समाज के ग्रामीण जीवन का यथार्थता से चित्रण करते हुए

भारतीय समाज के ग्रामीण जीवन का यथार्थता से चित्रण करते हुए भारतीय नारी के आमूलचूल स्थिती का भी सशक्त चित्रण किया है। अपनी कलम से कहानी, कविता, आत्मकथा, उपन्यास, नाटक, स्त्री-विमर्श आदि के माध्यम से हिंदी साहित्य के विविध विधाओं को संपन्न बना दिया है। अपने जीवन में जो देखा भोगा उसे परखकर उसका यथार्थ की भावभूमि पर अंकन करते हुये अपनी जन्मभूमी 'बुंदेलखण्ड' अँचल के लोक -जीवन से परिचित कराते हुए पहाड़ी-पर्वत इलाकों मे रहनेवाले संघर्षरत मानवजीवन का यथार्थ चित्रण पाठक के सामने प्रस्तुत किया है। आज वैश्विकीकरण, नीजीकरण, बाजारीकरण के कारण भारतीय ग्राम-जीवन में तेजी से बदलते परिवेश का चित्रण करते हुए औद्योगिककरण, विकासयोजनओं के परिणाम स्वरुप ग्रामीण लोगों के सामाजिक, पारिवारीक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक जीवन में तेजी से आने वाले परिणामों के साथ बदलते परिवेश से जुझते-संघर्षरत मनुष्य का जीवन मैत्रेयी के साहित्य का विषय है। जिसके माध्यम से ग्रामीण जीवन मैत्रेयी के साहित्य का विषय है। जिसके माध्यम से ग्रामीण जीवन में निर्माण हुई समस्याओं का अंकन करते हुए उससे मार्ग निकालने का प्रयत्न करनेवाला ग्रामीण जीवन चित्रत करनेवाली मैत्रेयी पुष्पा एक प्रगतीशील लेखिका है। 'इदन्नमम' उपन्यास में निम्नवर्ग, भूमीहीन किसान, मजदूर, स्त्री के प्रति सहानुभूति और प्रगतीशील दृष्टीकोन अपनाते हुए 'समूह संगठन' का महत्व प्रतिपादीत करनेवावाला यह उपन्यास हिंदी साहित्य जगत में 'माईलस्टोन' है।

आजादी के बाद भी किसान, मजदूर वर्ग, शिक्षा, आरोग्य, बिजली, जल, रोजगार, इन सुविधाओं से कोसों दूर है। अन्याय, अत्याचर, अशिक्षा, अंधविश्वास, दृष्टरुढी, परंपराओं को लेकर दासता मे जीनेंवाले मनुष्य समाज को अपने साहित्य के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पाने वाणी प्रदान की है।

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में ग्रामीण जीवन का चित्रण करते समय स्त्री केंद्रस्थल पर है। 'स्त्री' को 'लेकर' कथा बुनने वाली मैत्रेयी ने सदियों परिर्वतन का चक्र घुमाने जिम्मेदारी स्त्री पर सौंपते हुए भारतीय पुरुषप्रधान समाज को स्त्री शक्ति से परिचित कराया है मैत्रेयी के प्रत्येक कथासाहित्य की नायिका स्त्री ही रही है। 'इदन्नमम' में भी किसान से भूमीहीन

मजदूर बने किसान और आदिवासी मजदूरों के जीवन संघर्ष का चित्र करते हुए नायिका 'मंदा' के माध्यम से गाँव, क्षेत्र के विकास का चित्रांकन करते हुए समर्थ भारत के निर्माण के लिए 'समूह संगठण' का महत्व प्रस्थापित करते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने अपने मार्क्सवादी विचारों के साथ-साथ गांधीवादी आदर्श 'रामराज्य' की कल्पना करते हुए, सृजनशील, प्रगतीशील लेखिका के रुप में वह प्रस्तुत हई है। अपने 'दबंग' व्यक्तिमत्व से आकर्षित करनेवाली एक स्पष्टवादी लेखिका के रुप में मैत्रेयी पुष्पा अपना स्थान निर्माण कर चुकी है। 'इदन्नमम' इस उपन्यास पर लघु शोध कार्य करने का उद्देश सक्षेप में इस प्रकार दृष्टव्य है -

1. भारतीय समाज के स्त्री-जीवन की दासता को मुखर स्वर देना, उन परिस्थितीयों में से उन्हें उभारने की माँग करना।
2. बदलते सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक संदर्भो को दर्शाना ।
3. भारतीय स्त्री पर होने वाले अन्याय-अत्याचार के प्रति सुबुध्द पाठकों के भावविचार पक्ष को जागृत करना ।
4. विस्थापित मजदूरों की जीवन समस्याओं को रेखांकित करना।
5. कृषक से भूमीहीन, मजदूर बने मजदूरों की समस्याओं का चित्रण करना।
6. आज के वैज्ञानिक युग में भी भारतीय ग्रामों का प्राथमिक सुविधाओं से वंचित रहना, उनके जीवन की अनेकानेक समस्याँओं से परिचित करना।
7. मजदूरों को उनके हक के लिए जागृत करना।
8. पूँजिपति वर्ग के मन में पश्चाताप एवं परिवर्तन की भावना निर्माण करना।
9. समाज में स्थित विषमता को दूर करके समानता का महत्व विशद करनेवाली संस्कृति का निर्माण करना ।
10. भारतीय राजनीति के वैगुण्यों को दर्शाना ।
11. स्त्री को अपने हक से परिचित कराना ।
12. यथास्थितिवादी प्रवृत्ति में परिवर्तन लाना।

मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' उपन्यास के पूरे अध्ययन के उरान्त उपर्युक्त पहलूँओं पर विस्तार से प्रकाश डालने के लिए लघुशोध को निम्न अध्ययों मे विभाजित किया है।

मैत्रेयी पुष्पा का समग्र साहित्य स्वतंत्रता के बाद बदलते ग्रामीण जीवन को सभ्य, नागरी समाज के सामने प्रस्तुत करते हुए अछुत, सुदूर बसे भारतवासियों के विकास के प्रति प्रयत्नशिल रहने की चेतना प्रदान कर, ग्रामीण नारी की नयी पहचान करा दी है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को हमने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में मैत्रेयी पुष्पा के जीवन एवं व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हुये, उनके समग्र साहित्य का सक्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ ही उनके साहित्य की प्रेरणा एवं प्रभाव को स्पष्टकर उनकी अन्यकृतियों का नामनिर्देश किया है।

द्वितीय अध्याय में आँचलिकता और आँचलिक उपन्यासों के बारे में विशेष जानकारी दी गई है। आँचलिक उपन्यास का स्वरुप, परंपरा और विकासयात्रा को रेखांकित किया गया है।

तृतीय अध्याय में उपन्यास 'इदन्नमम' की कथावस्तु और उसकी विशेषता को स्पष्ट करते हुए 'अँचल' विशेषता से आच्छादित मानवी जीवन और उसकी विशेषताओं को उजागर करते हुये, शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट किया है।

चतुर्थ अध्याय में 'इदन्नमम' उपन्यास की विशेषता में सक्रमणकालीन ग्रामीण जीवन और मानसिकता के बदलते परिप्रेक्ष्य के साथ, परिवेश का नायकत्व, युग चेतना का निरुपण, 'इदन्नमम' में शोषण की प्रस्तुति, स्त्री-पुरुष संबंध, प्रकृति-चित्रण, और मानवीय भूमिका के साथ-साथ भाषा-शिल्प की विशेषता को प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय में 'इदन्नमम' उपन्यास में प्रस्तुत स्त्री पुरुष पात्रों की व्यक्तित्व रचना और निर्माण की महत्ता को प्रस्तुत करते हुए प्रत्येक 'पात्र' की विशेषता को उजागर किया है।

अंत में 'इदन्नमम' उपन्यास के पूरे अध्ययन के उपरान्त उपसंहार दर्ज किया गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध आदरणीय गुरुवर्य डॉ. सुरेश गायकवाड जी के आत्मीक निर्देशन और स्नेहप्रद प्रेरणाओं का प्रतिफलन है। उनकी गहरी अध्ययनशीलता, मौलिक चिंतन-मनन और तन्मय मार्गदर्शन से मैं पूरी तरह लाभान्वित हुई हूँ। अपने कार्य में व्यस्त होकर भी शोध-प्रबंध के विषय चयन से लेकर उसकी संपूर्ति तक इनकी सहाय्यता और यथायोग्य मार्गदर्शन रहा। इनका आत्मीक प्रेम मेरे अस्थिर मन को क्रियाशील, उत्प्रेरित और आधार देता रहा। मेरी बीमारी के समय शोध प्रबंध की अवधी बढ़ाकर देते हुए समय-समय पर एक पिता की तरह मेरे आरोग्य के प्रति सतर्कता बरतते हुए मुझे लेखन के लिए प्रेरित करते रहे। इनकी सहृदयता और विशाल ज्ञान-सागर से मुझे नई दृष्टी मिली। दिन-रात अध्ययनशील रहनेवाले, दूसरों की मदद करना तथा विशाल ज्ञान-सांगर वे पीड़ीत, दलित समाज वर्ग को जागृत करना उनके समाजसेवी रुप का दर्शन हुआ। अपनी नई-नई योजनाओं में व्यस्त रहकर भी मुझे समय देते रहें, सजग करते रहें। अत: मैं इनके विशाल ज्ञान-सागर से कृतार्थ हुई हुँ मेरा यह अनुसंधान का प्रयास इनकी सहृदयता का प्रतीक है। मुझे अनुसंधान से हमेशा नई दिशा देकर उपकृत किया है। इनके हिमालय के समान विशाल ऋण के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर ऋण मुक्त नहीं होना चाहती हूँ, बल्कि हमेशा उनके ज्ञान भंडार से लाभान्वित होने की प्रार्थना ईश्वर से करती हूँ।

आदरणिया सौ. प्रभावती (माई), स्नुषा डॉ. सोनल, पुत्र डॉ. देवदत्त, नानी माँ और कु. अन्वेष की मैं आभारी हुँ। पूरा परिवार अपने कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी मेरा बार-बार उनके घर जाना इनके लिए बाधा न बन गया बल्कि वे अपना काम छोड मेरी सहाय्यता करते रहे। अत: इनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करना उचित मानती हूँ।

आदरणीय डॉ. भरत सगरे, प्रा. जयवंत जाधव , डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. पद्मा पाटील, प्रा. माने मॅडम इनका पल-पल मिलनेवाला मार्गदर्शन मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ाता रहा. इन सभी की मैं आभारी हूँ।

हमारे महाविद्यालय के प्रधानाचार्य मा. डॉ. यशवंत पाटणे और स्टाफ की प्रेरणा से यह अनुसंधान कार्य सफल हुआ उनके प्रति ऋण व्यक्त करना मेरा धर्म मानती हूँ।

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के भूतपूर्व प्रधानाचार्य डॉ. सुहास साळुंखे, प्रधानाचार्य डॉ. आर. जी. शेजवळ और उनके स्टाफ का सहकार्य शोधकार्य को प्रेरणा देता रहा। उन सभी के प्रति कृतज्ञ हूँ।

मेरे पति आयु. विनोद ने इस शोध कार्य के समय पुत्र सुवज्र कि जिम्मेदारी उठाकर अध्ययन कार्य के लिए हमेशा प्रेरणा देते रहे। शिक्षा के लिये हमेशा प्रेरणा देनेवाले मार्गदर्शक के रूप में उन्हें पाकर उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरी परम-पूज्य माँ अल्पशिक्षित होकर जिंदगी भर हमारी शिक्षा के लिए प्रयत्नशील रही, उसके आशिष में रहना उचित समझती हूँ। साथ ही देवर सचिन, भाई विजय और बहन उषा की सहाय्यता रही। भाई राजू और भाभी कुंदा इनका सहकार्य हमेशा प्रेरणा देता रहा। अत: इनके स्नेहभरे ऋण को कृतज्ञता-ज्ञापित कर हल्का नहीं करना चाहती।

मेरे स्वर्गीय पिताजी और ससुर आण्णाजी के आशिष मुझे मिलते रहे, इनके आशिष से ही मेरा यह कार्य संपन्न हुआ। अत: इनके प्रति भी कृतज्ञता-ज्ञापित करती हूँ।

स्नेही/मित्र प्रा. डॉ. संजय कांबळे, प्रा. अजय कांबळे, प्रा. डॉ. अरुण पौडमल, प्रा. डॉ. सुरज चौगुले, प्रा. डॉ. शहानी पटेल इनकी भी मैं ऋणी हूँ। मेरे इस लम्बे समय तक चलनेवाले अनुसंधान के मार्ग पर पुल बनकर आनेवाली कठिनाईयों में हौसला देकर तथा हिम्मत बढ़ाते रहे। इनके प्रति भी मैं कृतज्ञता-ज्ञापित करती हूँ।

कला व वाणिज्य महाविद्यालय, सातारा, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा तथा शिवाजी महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथालय तथा शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के पुस्तकों से मैं लाभान्वित हुई। अत: इन सभी ग्रंथालयों के ग्रंथपाल तथा सभी कर्मचारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ।

शोध प्रबंध को सुचारु रुप से बांधने का कार्य करनेवाली श्री. मुकुंद ढवले जी और अनके सहयोगी श्री राजू कुलकर्णी जी, और श्री. पवार जी, पूजा, अस्मिती की भी मैं आभारी हूँ।

अंत में मेरी परोक्ष एवं अपरोक्ष सहाय्यता करनेवाले हितैषी सभी स्नेहियों की आभारी हूँ।

स्थान : सातारा
तिथि : 31 दिसंबर 2012

(कु. सुवर्णा नरसु कांबळे)
शोध-छात्रा